विदेश में = संस्कार - निर्माण शिविर - दुबई,

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या समणी विपुलप्रज्ञाजी और समणी विकासप्रज्ञाजी एक महीने तक दुबई प्रवास कर रही हैं। गुरुदेव की असीम अनुकम्पा का ही सुफल है कि आप श्री ने अनार्य देश में रहनेवाले हम श्रावक समाज व परिवारों की संभाल हेतु समणीजी को दुबई भेजा है। निस्संदेह दोनों समणीजी उत्साही व श्रमशील हैं। उनकी संघनिष्ठा का जन-मानस पर अच्छा प्रभाव है। यही कारण है कि समणीजी के प्रत्येक कार्यक्रमों में भी श्रद्धालुओं की उपस्थिति बढ़ती है। समणीजी के कार्यक्रम सुव्यवस्थित व संघीय प्रभावना बढ़ाने वाले हैं।

शिविर का उपक्रम :-

समणी विपुलप्रज्ञाजी, विकासप्रज्ञाजी के सान्निध्य में संस्कार - निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। करीब ७५ बच्चों ने शिविर में भाग लिया। समणी विपुलप्रज्ञाजी ने कहा कि आचार्य श्री महाश्रमणजी का सपना है कि हर क्षेत्र में देश या विदेश में भी संस्कारों को सिंचन देने के लिए 'ज्ञानशाला' का उपक्रम चले। वैसे दुबई में प्रत्येक शुक्रवार को ज्ञानशाला चलती है पर बच्चे कम पहुंचते हैं। ज्ञानशाला की महत्ता बढ़े और आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बने इसलिए समणी विपुलप्रज्ञाजी ने बच्चों के लिए अनेक नये टिप्स प्रस्तुत किये। सुंदर२ छोटी कहानियों के माध्यम से बच्चों व टीनेजरों को बताया कि स्कूल की डिग्रियाँ लेना very easy है, but good child से best child बनना कठिन है। विपुलप्रज्ञाजी ने यह भी कहा कि —

Nothing is impossible (सबकुछ संभव है)। उदाहरण दिया आचार्यमहाप्रज्ञजी को - वे नथु से महाप्रज्ञ कैसे बने? 'use your brain' - समणीजी ने बच्चों व टीनेजरों को एक एक १० मिनिट का ड्रामा बनाने के लिए प्रेरित किया। विपुलप्रज्ञाजी ने "जैनविश्वभारती" के आधार पर उनके ग्रुप बनाये जिससे उनको जैन विश्व भारती क्या है? और कौनसी संस्थाएँ है वो सब याद हो सके। जैसे पहला ग्रुप - ① जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय ② गौतमज्ञान शाला ③ विमलविद्या विहार ④ संवाद ⑤ कल्याणम् ⑥ नीड़म ⑦ जोधपुरमैल ⑧ कालू- विश्वविद्यालय इत्यादि।

समणी विकास-प्रज्ञाजी ने " जैन कान्टेस्ट की C.D दिखाई जिसमें चित्रों के माध्यम से पुरी कथा को प्रस्तुत करना था। इस कार्यक्रम में विकासप्रज्ञाजी ने बच्चों को Active बनाये रखा। और बड़े उत्साह के साथ बच्चों ने कथाएं प्रस्तुत की। पूरा दिन बच्चों को आनंद आया और कई बच्चे ज्ञानशाला के मेम्बर बने। मोना मैडम आदि कई प्रशिक्षिका बहिनें भी पूरे दिन Active रही। "प्रसन्नता" की बात है कि दोनों समणीजी ने दुबई में बच्चों के लिए एक ऐसा आकर्षण पैदा कर दिया है कि कई बच्चे समणीजी के प्रवचन में भी हर रोज आते है। नींद त्यागी, आतमा जागी।

प्रेक्षाध्यान शिविर (दुबई)

आत्मा भिन्न - शरीर भिन्न

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या समणी विपुलप्रज्ञाजी और विकासप्रज्ञाजी के सान्निध्य में आत्मार्थी, मुमुक्षु श्रावक - श्राविकाओं के लिए एवं जैनेतर भाई - बहिनों के लिए एक दिवसीय शिविर का आयोजन रश्मिभाई झवेरी के सुपुत्र सुनीलभाई झवेरी के यहां किया गया है।

उल्लेखनीय है कि अब तक के शिविरों में सर्वाधिक संख्या में भाई - बहिनों की उपस्थित हुई। रश्मिभाई ने जैन जीवन शैली के संदर्भ में विचार व्यक्त किये। समणी विपुलप्रज्ञाजी ने सर्वप्रथम शिविरार्थी भाई - बहिनों को प्रेक्षा-शिविर की दीक्षा प्रदान की। तत्पश्चात 'प्रेक्षाध्यान' का उद्भव कैसे हुआ? आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने अपने शरीर को प्रयोगशाला बनाकर कैसे कैसे प्रयोग किये? २० वर्षों तक, ध्यान के विभिन्न प्रयोग करके 'प्रेक्षाध्यान' प्रणाली को जनता के सामने कैसे प्रस्तुत किया इत्यादि रोचक बातें बताई फिर समणी विपुलप्रज्ञाजी ने ध्यान क्यों? और "प्रेक्षाध्यान" मुझे क्या देगा? इस विषय को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया साथ - साथ में छोटे - छोटे प्रयोग भी करवाते रहे जिससे उपस्थित शिविरार्थी भाई, बहिनें ध्यान गंगा में बहते रहे और तरोताजा रहे। निस्संदेह दुबई में समणीजी ने ऐसा अच्छा माहौल बनाया है कि लोगों का आकर्षण प्रेक्षाध्यान प्रवर्तक आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के दर्शन करने हेतु लालायित हो गया है। समणी विपुलप्रज्ञाजी ने कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञजी का स्वरूप अब आचार्य श्री महाश्रमणजी में विद्यमान है। जब भी आप भारत जाये इस महान योगी के दर्शन अवश्य करे क्यों कि आचार्य श्री महाश्रमणजी का निर्माण दो दो युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञजी द्वारा निर्मित है। लोग बड़े चाव से 'तेरापंथ' को सुनते है क्योंकि

विपुलप्रज्ञाजी जैन - जैनेतर लोगों को पूछते है आपका पंथ कौन सा है? मेरा पंथ तो - "हे प्रभो! यह तेरापंथ" है। तब लोग भी कहते है - हमारा पथ भी तेरापंथ है। हम सब भगवान महावीर स्वामी के अनुयायी है। इस जिनशासन की प्रभावना में हम सब तन-मन व भाव से संलग्न रहे।

समणी विकासप्रज्ञाजी ने ध्यान से जीवन को सार्थक कैसे बनाये? इस विषय पर अपने मार्मिक विचार प्रस्तुत करते हुये ~~उन्होंने~~ ऐसे कई महत्वपूर्ण टिप्स बताये जो जीवन को सार्थक बनाने में कामयाब हो सकते है। जैसे ACT — अर्थात - A for Affection। सब के साथ स्नेहभरा संबंध हो। Love begets love. C. for Communication सबके साथ सामजंस्यपूर्ण व्यवहार हो। T for Tolerance power - सहनशक्ति बढ़ाये। यदि ये तीन गुण जीवन में आजाये तो हम सबका जीवन सार्थक बन सकता है

उल्लेखनीय है कि श्रीमान राजेन्द्रजी बैंगानी व विजया बैंगानी के अथकश्रम से स्थानीय जैनेतर लोगों में और सभी संप्रदायों के कई भाई-बहिनें बड़े उत्साह साथ समणीजी के कार्यक्रम में उपस्थित होते है- यह सब गुरुदेव की असीम अनुकम्पा का सुफल है।